सबसे अमीर लोग सबसे ज़्यादा CO_2 पैदा करते हैं

ब्रिटिश संस्था ऑक्सफैम की रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया के सबसे अमीर 10 प्रतिशत लोग ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन में से 50 प्रतिशत के लिए ज़िम्मेदार हैं। यानी जीवाश्म ईंधन को जलाकर धरती को गर्म करने वाली गैसों के कुल उत्सर्जन में से आधा तो ये 10 प्रतिशत लोग पैदा करते हैं। और सबसे गरीब लोग (आबादी का 50 प्रतिशत) मात्र 10 प्रतिशत ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए ज़िम्मेदार है। यह रिपोर्ट पैरिस के जलवायु सम्मेलन से ठीक पहले आई है।

यह तो लंबे समय से विवाद का विषय रहा है कि धरती को गर्म करने वाली जो गैसें बहुत अधिक मात्रा में वातावरण में पहुंच रही हैं, उसके लिए किसे दोषी ठहराया जाए। ऑक्सफैम के जलवायु नीति टीम के अध्यक्ष टिम गोरे का मत है कि जो लोग सबसे ज़्यादा ग्रीनहाउस गैसें पैदा करते हैं, उन्हीं को इसके लिए जवाबदेह माना जाना चाहिए, और ये दुनिया के सबसे अमीर 10 प्रतिशत लोग हैं। रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अमीर 1 प्रतिशत लोगों में औसतन प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन सबसे निचले पायदान पर रहने वाले 10 प्रतिशत लोगों के औसत कार्बन उत्सर्जन से पूरे 175 गुना ज़्यादा है।

जवाबदेही के मामले में अमीर और गरीब देशों के बीच काफी विवाद रहा है। मूलतः कोयला, तेल और गैस जलाने की वजह से पैदा होने वाली कार्बन डाईऑक्साइड की ज़िम्मेदारी के मामले में विकासशील देशों का कहना है कि अधिकांश प्रदूषण औद्योगिक देशों ने फैलाया है, उन्हें इसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। विकासशील देशों की एक मांग यह भी है कि औद्योगिक देशों को धरती गर्माने के प्रभावों से निपटने में गरीब राष्ट्रों की मदद करनी चाहिए क्योंकि ये प्रभाव औद्योगिक देशों की करतूतों के परिणाम हैं।

मगर ऑक्सफैम की ताज़ा रिपोर्ट से यह भी स्पष्ट होता है कि जहां राष्ट्रों के बीच ज़िम्मेदारी का बंटवारा होना चाहिए, वहीं राष्ट्रों के अंदर भी ज़िम्मेदारी को एकसार ढंग से बांटा नहीं जा सकता। यहां भी आबादी के अलग-अलग तबके अलग-अलग हद तक ज़िम्मेदार हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***